IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण–कौशल एवं मनोवृत्ति का अध्ययन

[1]अंजना एवं [2]डॉ० एस० बी० रॉय

[1]शोध–छात्रा, शिक्षा शास्त्र विभाग, एल० एन० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

[2]प्राचार्य, फखरूद्दीन अली अहमद टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, दरभंगा।

सारांश : वर्तमान अध्ययन में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण–कौशल एवं मनोवृत्ति का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में पटना जिला के माध्यमिक स्तर के 40 विद्यालयों से 250 शिक्षक एवं 250 शिक्षिकाओं का चयन करते हुए कुल 500 प्रतिदर्श का चयन गुच्छ यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। अध्ययन के लिए साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण–कौशल तथा मनोवृत्ति पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना है और इसके प्रभाव की सीमा स्पष्ट करना है। शिक्षण कौशल के विभिन्न आयामों पर स्वनिर्मित उपकरण के द्वारा अध्ययन की सार्थकता की जाँच की गई है। आरबीएसई पद्धति के शिक्षण कौशल के इन आयामों को चुनने का कारण केवल इस धारणा को जानने के लिए ही नहीं, बल्कि यह भी जानना है कि इस शिक्षण कौशल को प्रभावी ढंग से किस हद तक लागू किया जाता है तथा इसमें सुधार करने के लिए और क्या किया जा सकता है। परिणाम इंगित करते हैं कि लिंग के आधार पर, क्षेत्र के आधार पर सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं के शिक्षण कौशल में सार्थक अंतर है।

शब्द कुंजी : माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक, शिक्षिका, शिक्षण–कौशल, मनोवृत्ति।

1. प्रस्तावना :

समग्र प्रगति के लिए शैक्षिक भागीदारी के सुधरे स्तरों की आवश्यकता भली–भांति सर्वमान्य है। इसे चरितार्थ करने के लिए शैक्षिक संस्थानों की मूलभूत भूमिका उन अनेक प्रयासों द्वारा प्रतिबिम्बित होती है जो भिन्न स्तरों/चरणों पर औपचारिक तथा औपचारिकेतर दोनों ही प्रकार की शिक्षा के स्वरूप ओर क्रियाकलापों में जन सम्मान मूल्यों तथा आकांक्षाओं के अनुरूप परिवर्तन लाने की दिशा में किए जा रहे हैं।

संतोषजनक विकास के लिए गुणवत्तायुक्त शिक्षा तक व्यापक पहुंच अनिवार्य मानी जाती है। इसी करण शिक्षक शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता पड़ी है ताकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तैयार किए जा सकें। केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा हाल ही के दशकों में नियुक्त किए गए सभी आयोगों और समितियों ने, औपचारिक तथा औपचारिकेत्तर दोनों ही शिक्षा प्रणालियों की आवश्यकताओं के अनुरूप, गुणवत्तापूर्ण शिक्षक शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

शिक्षा की किसी भी प्रणाली में अध्यापकों की व्यवसायिक तैयारी बहुत महत्वपूर्ण होती है। इस संबंध में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम और अध्यापक प्रशिक्षण दोनों अभिव्यक्तियां एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होती हैं जबकि अध्यापक शिक्षा का अर्थ अधिक व्यापक है। प्रशिक्षण का निहितार्थ यह है कि अध्यापकों को अध्यापन में व्यवसायिक कौशल के लिये ही तैयार नहीं होना बल्कि उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में विकास को सुनिश्चित करना है। जिसके लिये उसके

मानसिक और संवेगात्मक विकास, अभिव्यक्ति निर्माण पर भी ध्यान दिया जाना हैं और समय– समय पर उसका उचित अभिविन्यास किया जाना है।

सर्वप्रथम 1881–82 में भारतीय शिक्षा आयोग ने पहले – पहले शिक्षकों को प्रशिक्षण का सुझाव दिया। शहरमपुर में डेनमार्क के धर्मोपदेशों ने नार्मल स्कूल खोला, बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास में भी इस प्रकार के स्कूल खोले गये। 1826 में मद्रास में प्रशिक्षण स्कूल की स्थापना की गई। 1845 से 1859 तक सरकार ने चार नार्मल स्कूल खोले। 1913 में प्रस्ताव ही पास कर दिया गया कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में किसी भी अध्यापक को पढ़ाने के अनुमति उस समय तक न मिले जब तक उसके पास पढाने की योग्यता का प्रमाण पत्र न हो।

शिक्षण :–

शिक्षण की अवधारणा मनुष्य के विकास के साथ जुड़ी है। जब से एक सभ्य सुसंगठित समाज की स्थापना हुई तभी से शिक्षा का अस्तित्व विद्यमान है, शिक्षा की अवधारणा में समय–समय पर परिवर्तन होते रहे किन्तु इसकी महत्ता कभी कम नहीं हुई। शिक्षा की उत्पत्ति संस्कृत के शिक्ष घातु से हुई है जिसका अर्थ है, सिखाना अथवा शिक्षा प्रदान करना। सिखाने या शिक्षा देने का कार्य गुरू या शिक्षक द्वारा सम्पन्न किया जाता है। इस प्रकार प्रारम्भ में शिक्षण या शिक्षा को द्विध्रुवीय प्रक्रिया के रूप में देखा गया जिसमें शिक्षक जो अधिक परिपक्व और ज्ञानवान था, छात्र को, जो अपरिपक्व के साथ सम्बन्ध स्थापित कर उसे नवीन ज्ञान का बोध कराता था। इस विचारधारा में शिक्षक को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।

शिक्षण के अर्थ को दो प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है प्रथम व्यापक अर्थ दूसरा संकुचित अर्थ। व्यापक अर्थ के अनुसार शिक्षण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें परिवार पड़ोसी मित्र इत्यादि व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक की यात्रा के बीच सिखाते हैं। संकुचित अर्थ के अनुसार शिक्षण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा शिक्षक या जाति के अनुभवी सदस्य किसी शिक्षा संस्थान या अन्य संस्थान पर बालकों के पूर्व निश्चित विषय या जातीय अनुभवों को सिखाते हैं ताकि वे जीवन में अपना व्यवस्थापन करने में समर्थ हो। जेराड महोदय का कहना है कि ''शिक्षण से तात्पर्य उस प्रक्रिया या उस साधन से लिया जाता है जिसके द्वारा किसी वर्ग के वे सदस्य जो अनुभवी हों अपरिपक्व एवं शिशु सदस्यों को जीवन में अपना व्यवस्थापन करने में पथ–प्रदर्शन करते हैं।''

शिक्षण कौशल

शिक्षण कौशल शिक्षक से सम्बन्धित व्यवहारों का एक समुच्चय होता है जो छात्र के अधिगम में सहायता करता है। अन्य व्यवहारों की भांति शिक्षण व्यवहारों में भी संशोधन किया जा सकता है। शिक्षण कौशल शिक्षक के व्यवहार के रूप में प्रकट होते हैं। शिक्षण का उद्देश्य छात्रों को सीखने में सहायता पहुँचाना होता है। शिक्षक की सभी क्रियाएँ इसी उद्देश्य की ओर उन्मुख रहती हैं। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षक कक्षा में पढ़ाते समय कभी भाषण करता है, तो कभी कहानी सुनाता है, कभी उदाहरण देता है, तो कभी गूढ़ विषयों की व्याख्या करता है, कभी बालकों से प्रश्न पूछता है, तो कभी कुछ करके दिखलाता है। कभी हँसता है, कभी अभिनय करता है, तो कभी शान्त हो जाता है। पढ़ाते समय होने वाली ये सभी क्रियाएँ उसके कौशल हैं, अर्थात शिक्षण कौशल हैं। ये सभी कौशल मिलकर शिक्षण कला का रूप ग्रहण कर लेते हैं इसलिए यह कहना उचित है कि शिक्षण एक ऐसी कला है जो अनेक शिक्षण कौशलों पर आधारित है। शिक्षण कौशल को अध्यापन के समय शिक्षक के व्यवहारों का वह समूह मानना चाहिए जो छात्र के अधिगम में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता प्रदान करने के लिए उपयोगी होता है।

वसन एवं पी. के. (2014) ने टीचिंग कॉम्पीटेन्स एण्ड टीचिंग स्टाइल ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों की शिक्षण शैली एवं शिक्षण दक्षता के बीच सम्बन्ध की जांच करना था। अध्ययन के लिए न्यादर्श हेतु केरल राज्य के कलीकत्तदत्त शहर के 50 प्राइमरी शिक्षकों जिसमें से 23 पुरुष शिक्षकों तथा 27 महिला शिक्षकों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया। सर्वेक्षण विधि के प्रयोग द्वारा प्रदत्त एकत्र किये गये व निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि महिला एवं पुरुष शिक्षकों की शिक्षण शैली में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया व शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षण शैली के मध्य धनात्मक सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

अवस्थी (2015) ने अ स्टडी ऑफ नीड टू चेंज इन टीचिंग स्टाइल पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की शिक्षण शैलियों में परिवर्तन की आवश्यकता पर जांच करना था। अध्ययन में न्यादर्श हेतु इन्दौर के 5

कॉलेज के 20 शिक्षकों का यादृच्छिक न्यादर्शन द्वारा चयन किया गया। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। अध्ययन में निष्कर्षतः देखा गया कि शिक्षक पारम्परिक शिक्षण शैली का प्रयोग अधिक करते हैं व उनमें सफल भी पाये गये। लेकिन शिक्षकों द्वारा प्रयोग की गई सबसे ज्यादा प्रगति शिक्षण शैली अधिक सफल शिक्षण शैली पाई गई।

2. अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

हमारे राज्य और देश की आर्थिक, सामाजिक एवं तकनीकी परिस्थितियों में तीव्र परिवर्तनों के कारण कक्षा–कक्ष शिक्षण एवं शिक्षा मनोविज्ञान के उपयोग के कारण हमें श्रेष्ठ, सक्षम एवं प्रभावी शिक्षकों की आवश्यकता हो रही है। अतः यह जानने के लिए शिक्षण प्रशिक्षण के लिए सही प्रकार के व्यक्तियों की जरूरत है जिसके चयन के लिए शिक्षकों की शिक्षण–कौशल की जानकारी हर प्रशिक्षित शिक्षकों में होनी जरूरी है। जिस प्रकार श्रेष्ठ चिकित्सक, वकील, इंजीनियर, प्रबन्धक आदि के लिए कुछ मूलभूत आवश्यकताएँ एवं प्रतिबद्धताएँ होती हैं, उसी प्रकार एक अच्छा शिक्षक बनने हेतु बुनियादी समझ की, सिद्धान्तों की, उन्हें अपने अंतर्मन में उतारने की आवश्यकता होती है। विद्यालय में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक का सीधा सम्बन्ध छात्रों से होता है। शिक्षक बालकों का सर्वांगीण विकास करने में सहायक होता है। वह छात्रों को प्रगति की राह दिखाने वाला पथ प्रदर्शक होता है। वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु कई योजनाएँ चलाई जा रही है जिनमें शिक्षकों की भूमिका अहम है। अतः शिक्षकों की शिक्षण–कौशल की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

- लिंग के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण–कौशल के सार्थक अंतर का पता लगाना।
- ग्रामीण एवं शहरी के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण–कौशल के सार्थक अंतर का पता लगाना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण–कौशल के सार्थक अंतर का पता लगाना।

4. अध्ययन की परिकल्पना :

- लिंग के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण–कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण–कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण–कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।

5. अनुसंधान प्रविधि :

वर्तमान अध्ययन में शोधार्थी ने वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान (Descriptive Survey Research) का अनुसरण किया है।

अध्ययन का नमूना : अध्ययन के लिये पटना जिला के 40 सरकारी/गैर–सरकारी/निजी माध्यमिक विद्यालयों से 250 शिक्षक एवं 250 शिक्षिकाएं का चयन करते हुए कुल 500 प्रतिदर्श का चयन गुच्छ यादृच्छिक नमूना तकनीक के द्वारा किया गया है।

अध्ययन के लिए प्रयुक्त उपकरण : स्वनिर्मित मनोवृत्ति मापनी एवं स्वनिर्मित शिक्षण–कौशल परीक्षण मापनी का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त आंकड़ों को टी–परीक्षण, मध्यमान एवं मानक विचलन के द्वारा संग्रहित नमूनों का विश्लेषण किया गया है।

6. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में शिक्षण कौशल के प्रति धारणा का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षण कौशल के प्रकारों का उपयोग किया गया है। इन प्रकारों को शिक्षण कौशल के आयाम के रूप में नामित किया गया है। जिस पर शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के शिक्षण कौशल का मूल्यांकन करने के लिए स्व–निर्मित उपकरण बनाए गए हैं। आरबीएसई पद्धति के शिक्षण कौशल के इन आयामों को चुनने का कारण केवल इस धारणा को जानने के लिए ही नहीं, बल्कि यह भी जानना है कि इस शिक्षण कौशल को प्रभावी ढंग से किस हद तक लागू किया जाता है तथा इसमें सुधार करने के लिए और क्या किया जा सकता है।

सारणी–1

लिंग के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षण कौशल एवं मनोवृति का अध्ययन

क्र	शिक्षण कौशल	भाग	मध्यमान	मानक विचलन	टी परीक्षण
1	प्रस्तावना कौशल	महिला	21.11	1.58	8.214
		पुरूष	20.15	1.23	
2	कक्षा–कक्ष प्रबंधन कौशल	महिला	16.53	1.08	5.084
		पुरूष	15.73	1.02	
3	श्यामपट्ट कौशल	महिला	15.80	1.11	16.12
		पुरूष	18.20	1.26	
4	उद्दीपन परिवर्तन कौशल	महिला	16.15	1.22	5.623
		पुरूष	16.27	1.31	
5	पुनर्बलन कौशल	महिला	17.24	1.28	1.975
		पुरूष	17.29	1.31	
6	खोजपूर्ण प्रश्न कौशल	महिला	14.82	1.24	8.251
		पुरूष	13.91	1.12	
7	लेखन कौशल	महिला	15.17	1.26	8.228
		पुरूष	14.19	1.30	
8	दृष्टांत या उदाहरण कौशल	महिला	16.54	1.43	9.958
		पुरूष	17.21	1.38	
9	व्याख्यान कौशल	महिला	14.15	1.24	8.819
		पुरूष	15.75	1.29	
10	शिक्षण सहायक सामग्री प्रयोग कौशल	महिला	16.45	1.14	10.131
		पुरूष	15.25	1.27	

उपरोक्त टी परिक्षण में शिक्षण कौशल के प्रति लिंग के आधार पर महिला एवं पुरूष माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति के 10 भागों के टी स्कोर क्रमशः 8.214, 5.084, 16.12, 5.623, 1.975, 8.251, 8.228, 9.958, 8.819 तथा 10.131 प्राप्त हुये है जो सार्थक मानक 1.96 से अधिक है उपरोक्त परिणाम सिद्व करते है कि शिक्षण कौशल के प्रति प्रशिक्षित महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति पुरूष प्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सारणी–2

ग्रामीण एवं शहरी के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण कौशल एवं मनोवृत्ति

क्र	शिक्षण कौशल	भाग	मध्यमान	मानक विचलन	टी परीक्षण
1	प्रस्तावना कौशल	शहरी	22.19	1.62	8.557
		ग्रामीण	21.17	1.28	
2	कक्षा–कक्ष प्रबंधन कौशल	शहरी	17.01	1.12	5.391
		ग्रामीण	16.53	1.06	
3	श्यामपट्ट कौशल	शहरी	15.73	1.01	17.16
		ग्रामीण	17.35	1.22	
4	उद्दीपन परिवर्तन कौशल	शहरी	17.19	1.48	6.543
		ग्रामीण	17.97	1.44	
5	पुनर्बलन कौशल	शहरी	18.06	1.41	2.077
		ग्रामीण	18.30	1.42	
6	खोजपूर्ण प्रश्न कौशल	शहरी	15.84	1.32	8.576
		ग्रामीण	14.88	1.42	
7	लेखन कौशल	शहरी	16.78	1.38	8.622
		ग्रामीण	15.78	1.46	
8	दृष्टांत या उदाहरण कौशल	शहरी	15.58	1.42	10.328
		ग्रामीण	16.72	1.28	
9	व्याख्यान कौशल	शहरी	15.84	1.32	9.187
		ग्रामीण	16.88	1.45	
10	शिक्षण सहायक सामग्री प्रयोग कौशल	शहरी	17.40	1.30	11.516
		ग्रामीण	16.12	1.42	

उपरोक्त टी परिक्षण में शिक्षण कौशल के प्रति शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति के 10 भागों के टी स्कोर क्रमशः 8.557, 5.391, 17.16, 6.543, 2.077, 8.576, 8.622, 10.328, 9.187 तथा 11.516 प्राप्त हुये है जो सार्थक मानक 1.96 से अधिक है उपरोक्त परिणाम सिद्व करते है कि शिक्षण कौशल के प्रति प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सारणी–3

सरकारी एवं गैर सरकारी के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण कौशल एवं मनोवृत्ति

क्र	शिक्षण कौशल	भाग	मध्यमान	मानक विचलन	टी परीक्षण
1	प्रस्तावना कौशल	सरकारी	22.31	1.73	8.125
		गैरसरकारी	21.11	1.31	
2	कक्षा–कक्ष प्रबंधन कौशल	सरकारी	18.23	1.81	6.537
		गैरसरकारी	16.17	1.14	
3	श्यामपट्ट कौशल	सरकारी	16.64	1.52	16.511
		गैरसरकारी	17.18	1.21	
4	उद्दीपन परिवर्तन कौशल	सरकारी	18.21	1.91	5.629
		गैरसरकारी	17.08	1.21	
5	पुनर्बलन कौशल	सरकारी	19.28	1.62	1.939
		गैरसरकारी	18.62	1.33	
6	खोजपूर्ण प्रश्न कौशल	सरकारी	16.83	1.47	7.869

		गैरसरकारी	15.46	1.39	
7	लेखन कौशल	सरकारी	17.53	1.92	8.116
		गैरसरकारी	15.14	1.28	
8	दृष्टांत या उदाहरण कौशल	सरकारी	16.84	1.59	9.821
		गैरसरकारी	15.14	1.41	
9	व्याख्यान कौशल	सरकारी	16.56	1.32	8.562
		गैरसरकारी	15.63	1.35	
10	शिक्षण सहायक सामग्री प्रयोग कौशल	सरकारी	18.14	1.54	10.618
		गैरसरकारी	15.19	1.23	

उपरोक्त टी परिक्षण में शिक्षण कौशल के प्रति सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति के 10 भागों के टी स्कोर क्रमशः 8.125, 6.537, 16.511, 5.629, 1.939, 7.869, 8.116, 9.821, 8.562 तथा 10.618 प्राप्त हुये है जो सार्थक मानक 1.96 से अधिक है उपरोक्त परिणाम सिद्व करते है कि शिक्षण कौशल के प्रति प्रशिक्षित सरकारी शिक्षकों की अभिवृत्ति गैर–सरकारी प्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

7. निष्कर्ष :

- उत्तरदाताओं में 50 प्रतिशत महिला शिक्षिका तथा 50 प्रतिशत पुरूष शिक्षक सम्मिलित थे।
- उत्तरदाताओ में 50 प्रतिशत शिक्षिक/शिक्षिका नगरीय परिवेश में स्थित विद्यालयों से तथा 50 प्रतिशत शिक्षिक/शिक्षिका ग्रामीण परिवेश में स्थित विधालयो से थे।
- उत्तरदाताओ में 60 प्रतिशत शिक्षिक/शिक्षिका सरकारी विद्यालयों से तथा 40 प्रतिशत शिक्षिक/शिक्षिका गैर सरकारी विद्यालयों से थे।
- लिंग के आधार पर सम्पूर्ण शिक्षण आधार कौशल के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।
- विद्यालयी अवस्थिति के आधार पर सम्पूर्ण शिक्षण कौशल के प्रति शहरी शिक्षकों की अभिवृत्तियों में ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- विद्यालय के प्रकार के आधार पर सम्पूर्ण शिक्षण कौशल के प्रति गैर सरकारी विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्तियों में सरकारी विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षकों की अपेक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

8. सुझाव :

माध्यमिक शिक्षा की स्थिति व गुणवत्ता के उन्नयन हेतु तमाम सरकारी व गैर सरकारी प्रयासों, नीतियों, अद्यतन योजनाओं का क्रियान्वयन हो रहा है तथापि आवश्यकता है शिक्षकों के निजी प्रयासों, वैयक्तिक व सांवेगिक उन्नयन के प्रति सचेष्टता की। एक ओर सरकार द्वारा इन योजनाओं के उचित क्रियान्वयन तथा सामयिक मूल्यांकन करने की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर शिक्षकों को भी अपनी सक्रिय भागीदारी द्वारा इन्हें सफल बनाने की जरूरत है, क्योंकि शिक्षकों के सहयोग व प्रतिबद्धता के अभाव में अच्छी से अच्छी योजनाएँ भी निष्फल व प्रभावहीन होने की सम्भावना रहती है। अतः प्रत्याशा है कि कथित शिक्षक संवर्ग अपनी संज्ञानात्मक व व्यवहारगत दक्षताओं में अभीष्ठ संवृद्धि करते हुए समयानुकूल अपने आप को परिवर्तित कर अपनी शिक्षण प्रक्रिया को निरन्तर सफल बनाने का प्रयास करेंगे; यही हमारी मंगलकामना है।

संदर्भ–सूची

[1] हफ तथा ओवर. (1967), अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी।

[2] गाँधी डी० एण्ड पैलसेन एम०एन० (1967) शिक्षण अभ्यास, अध्यापक शिक्षक वाल्यूम, 1–3 पृ0सं0 1–34

[3] जायसवाल, सीताराम (1969), 'वृहत् शिक्षा शास्त्र', नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्श, वाराणसी, पृ.सं. 16

[4] Kothari, D.S. (1970), Education and National Development, Report of the Education Commission 1964-66, Govt. of India, New Delhi, p.497

[5] भदौरिया, सुनीता (2013), उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, शोध समीक्षा और मूल्यांकन, जनवरी 2013, पृ0 93.

[6] शर्मा, पी. (2014), माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, Retrieve on 8 May 2022 from www.shodhganga.infilibnet.ac.in/handle/10603/34128.

[7] जी0 दास (2015), 'शिक्षा की शर्मनाक हकीकत'; दैनिक जागरण, अक्तूबर 2, आगरा।

[8] डा0 भट्टाचार्य जी0सी0 (2016–17) अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, प्र0सं0 193

[9] शर्मा, आर0ए0 (2013), अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी, मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।

[10] अमनदीप और गुरप्रीत (2005) शिक्षण योग्यता के संबंध में शिक्षक प्रभावकारिता का एक अध्ययन। रीसेंट रेसर्चेस इन एजुकेशन एंड साइकोलॉजी। वॉल्यूम 71(6) पृष्ठ संख्या 137–140।

[11] कुमार, पी. और मुथा, डी.एन. (1974). माध्यमिक शिक्षकों के लिए शिक्षक प्रभावकारिता पैमानाः इसका विकास और मानकीकरण। इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन, वॉल्यूम 5 (2), पृष्ठ संख्या 56–59।

[12] कोठारी, सी. आर. (2013), रिसर्च मेथोडोलॉजी मेथड्स एंड टेक्निक्स, नई दिल्ली, न्यू ऐज इंटरनेशनल पब्लिशर्स, प्राइवेट लिमिटेड.

[13] हेनरी ई. गरेट (2014), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, नई देल्ही, कल्याणी पब्लिशर्स, ISBN–81–7096–103–3.